Question:- Discuss the relevance of interdisciplinary research ?.

or,

What is interdisciplinary research?. Discuss its advantages and limitations.

or

अन्तरविषयक शोध की संगति की विवेचना करें।

अथवा

अन्तर विषयक शोध किसे कहते हैं ?. उनके लाभों तथा सीमाओं का वर्णन करें ?.

Ans :- शोध के कई प्रकार होते हैं उनमें अन्तरविषयक शोध एक महत्वपूर्ण प्रकार है। अन्तरविषयक शोध का अर्थ वह शोध है जिसको दो अर्थों में परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। असल में अन्तर विषयक शोध की परिभाषा शोध की परिभाषा पर आधारित है।

पहले अर्थ में अन्तरविषयक शोध का तात्पर्य उस शोध से है जिसके अन्तर्गत एक से अधिक विषयों से सम्बन्धीत नए ज्ञान की खोज की जाती है। यहाँ शोध समस्या ऐसी होती है जिसमें दो या अधिक विषयों की विशेषज्ञ भाग लेते हैं वे मिल-जुलकर एक नए ज्ञान की खोज करते हैं। जैसे ASTHMA क्यों होता है यह एक जटिल समस्या है इस समस्या के समाधान में चिकित्सक के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्री और मानवशास्त्री की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में उस समस्या के समाधान के लिए चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक, शरीरशास्त्री, मानवशास्त्री मिल जुलकर प्रयास करते हैं। इस प्रकार उन सभी विषयों के विशेषज्ञ एक

Scanned with CamScanner

नए ज्ञान की खोज का प्रयास करते हैं।

दूसरे अर्थ में अन्तरविषयक शोध का तात्पर्य ऐसे शोध से है जिसमें भिन्न-भिन्न विषयों के विशेषज्ञ मिल-जुलकर किसी पुराने ज्ञान की संपुष्टी करते हैं जैसे भारतीय परिवेश में विश्वास किया जाता है कि साम्प्रदायिक दंगों का आधार राजनैतिक कारक है। अतः अन्तरविषयक शोध के आधार पर साम्प्रदायिक दंगों से सम्बन्धीत उस निष्कर्ष की संपुष्टी की जाती है। उस शोध कार्य में मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र के विशेषज्ञ का सहयोग आवश्यक होगा। ये सभी विशेषज्ञ मिल-जुलकर उस बात का अनुसंधान करेंगे कि साम्प्रदायिक दंगों का वास्तविक कारण क्या है। अतः उसे अन्तरविषयक संपुष्टि शोध कहेंगे।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि अन्तरविषयक शोध का व्यवहार उपर्युक्त दोनों अर्थों में किया जाता है। अब देखना यह है कि यह शोध कहाँ तक संगत है और उसके कौन-कौन से गुण तथा दोष हैं।

MERITS

अन्तरविषयक शोध का व्यवहार वर्तमान समय में अधिक होने लगा है क्योंकि उस शोध के कुछ ऐसे गुण हैं जो किसी दूसरे प्रकार के शोध में नहीं पाये जाते हैं। उस संदर्भ में उसके निम्नलिखित गुण हैं।

(1) अन्तरविषयक शोध के गुणों की चर्चा करते हुए MC Gaugam ने कहा है कि जटिल समस्या के समाधान में यह शोध काफी उपयोगी होती है। उसका अनुसंधान एकांकी शोध से संगत नहीं होता है। उसके लिए अन्तरविषयक शोध आवश्यक होता है। उस दृष्टीकोण से एकाकी शोध की

अपेक्षा अन्तरविषयक शोध श्रेयस्कर है।

(2) अन्तरविषयक शोध ऐसी समस्याओं के लिए अधिक संगत होता है। यह समस्याएँ बहु-आयामी होती है। बहु-आयामी समस्या वह समस्या है जिसकी विमा एक से अधिक होती है। उसे multidimensional problem कहते हैं उस प्रकार की समस्या का समाधान ऐसी एकाकी शोध से संगत नहीं होता है। अतः उस दृष्टिकोण से भी एकाकी शोध की अपेक्षा अन्तरविषयक शोध अधिक उपयोगी है।

(3) उसप्रकार के शोध के गुणों की चर्चा करते हुए Kerlinger (1978) ने कहा है कि ऐसी समस्या के लिए शोध उपयोगी है जिसके कई पक्ष होते हैं कुछ समस्याएं ऐसी होती है जिनमें एक से अधिक पक्ष होते हैं जैसे साम्प्रदायिक दंगे क्यों होते हैं? लोग भीख क्यों मांगते हैं? आदि समस्याएं ऐसी है जिनके कई पक्ष है अतः ऐसी समस्याओं के समाधान के लिए केवल अन्तरविषयक शोध ही सक्षम हो पाता है। उस दृष्टिकोण से भी अन्तरविषयक शोध अधिक उपयोगी है।

(4) उसप्रकार के शोध का एक गुण यह है कि उस शोध के अधिक सही होने की संभावना बनी रहती है। कारण यह है कि उस तरह के शोध में कई विशेषज्ञ भाग लेते हैं इसलिए ऐसे शोध के आधार पर जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं वे अधिक सही होते हैं। यह गुण एकाकी शोध में नहीं है।

(5) अन्तरविषयक शोध में उच्च विश्वसनीयता का गुण पाया जाता है। उसके द्वारा जो परिणाम प्राप्त होते हैं वे अधिक विश्वसनीय होते हैं। कारण यह है कि उसप्रकार के शोध में एक अधिक शोधकर्ता भाग लेते हैं।

(6) अन्तर विषयक शोध में उच्च वैधता का गुण पाया जाता है। इस प्रकार के शोध में जो परिणाम प्राप्त होते हैं उनमें भविष्यवाणी वैधता अधिक होती है। दूसरे शब्दों में अन्तरविषयक शोध के आधार पर प्राप्त परिणामों के आलोक में भविष्यवाणी करना अधिक संभव होता है।

DEMERITS

अन्तरविषयक शोध के कई गुणों का उल्लेख ऊपर किया गया है। फिर भी इस प्रकार के शोध में कई तरह के दोष पाए जाते हैं जिनमें निम्नलिखित दोष विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

(1) अन्तरविषयक शोध का एक गंभीर दोष यह है कि उसका क्षेत्र बहुत सीमित होता है। उसका व्यवहार सभी परिस्थितियों में संभव नहीं होता है। उसका व्यवहार केवल वहाँ किया जाता है जहाँ शोध की समस्या जटिल होती है। अतः सामान्य शोध की तुलना में अन्तरविषयक शोध का क्षेत्र सीमित होता है।

(2) MC Cruguin (1960) ने अन्तरविषयक शोध की आलोचना करते हुए कहा है कि यह शोध सभी शोध समस्या के लिए उपयुक्त नहीं होता है। जैसे: यदि कोई समस्या uni dimentional हो तो उसके समाधान के लिए अन्तर विषयक शोध का व्यवहार करना उचित नहीं होता है।

(3) इस प्रकार के शोध की आलोचना करते हुए Festinger (1957) ने कहा है कि इस प्रकार के शोध के आधार पर सही निष्कर्ष को प्राप्त होने की संभावना कम रहती है। उनके अनुसार इस शोध में कई विशेषज्ञ भाग लेते हैं अतः यदि विशेषज्ञ की मनोवृत्ति तथा उनके दृष्टीकोण में मतभेद होता है तो

सही निष्कर्ष हासिल करना संभव नहीं होता है।

(4) अन्तरविषयक शोध में पक्षिगुणता का अभाव पाया जाता है। यहाँ कई विशेषज्ञों के एक साथ काम करने के कारण व्यक्तित्व खो जाता है। जिससे पक्षिगुणता समाप्त हो जाती है।

(5) अन्तरविषयक शोध की आलोचना करते हुए Kerlinger का कहना है कि इस प्रकार के शोध में व्यवस्थितता का भारी अभाव पाया जाता है। इसके कारण की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि यहाँ समस्या बहु-आयामी होती है जिसे यथार्थ रूप में संचालित करना कठिन हो जाता है।

(6) इस शोध में व्यावहारिक कठिनाई पायी जाती है। शोध समस्या के जटिल तथा बहु-पक्षीय होने के कारण समय अधिक लगता है। श्रम अधिक करना पड़ता है और मुद्रा का खर्च भी अधिक होता है।

इसप्रकार स्पष्ट हो जाता है कि अन्तरविषयक शोध के उपर्युक्त कई गुण तथा दोष है, यह भी स्पष्ट हो जाता है कि यह शोध कुछ परिस्थितियों में संगत होता है और कुछ परिस्थितियों में संभव नहीं होता है। अतः इसका उपयोग केवल ऐसी परिस्थिति में करना चाहिए जहाँ यह शोध संगत हो।

Scanned with CamScanner